टिप्पणी

225hi03pm

3

मानव व पशु आकृतियाँ (Human and Animal Figures)

जल, स्थल व आकाश में हम असंख्य प्राणियों को विचरण करते व उनके कार्यकलापों को देखते हैं। संसार भर में इन सभी जीवों की विभिन्न जातियां, स्त्री वर्ग व पुरुष वर्ग के रूप में दिखाई देती हैं जिसके कारण इनका स्वरूप और शरीर की बनावट भिन्न–भिन्न प्रकार की होती है।

यदि हम उन्हें ध्यान से देखें तो इन सभी के शरीर की बनावट में सुन्दरता, कोमलता, सुडोलता व लचीलापन दिखाई देता है। ईश्वर ने इन सभी के शरीर की बनावट को सही अनुपात में बनाया है, जिसके कारण वे अपने कार्य आसानी से कर लेते हैं।

इन सभी प्राणियों में मनुष्य सबसे श्रेष्ठ प्राणी है। इसीलिए मनुष्य में श्रेष्ठ भावनायें पाई जाती हैं। इन्हीं भावनाओं के प्रभाव से चित्रकार भी अपनी चित्रकला के माध्यम से वही भाव अपने चित्रों में प्रकट करता है।

कला के विद्यार्थी को चाहिए कि इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए इनकी आक तियाँ बनाने का अभ्यास करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के बाद, आप –

- शरीर की बनावट, नाप व अनुपात के बारे में जानकारी ले पायेंगे;
- सरल रेखा-चित्रण को बनाना सीख सकेंगे;
- स्केच बनाना सीख सकेंगे; और
- रेखाओं में गतिशीलता लाने में सक्षम हो सकेंगे।

आवश्यक सामग्री

मोटा गत्ता या ड्राइंग बोर्ड, ड्राइंग पेपर (काटरेज या चार्ट पेपर), पैंसिल HB, 2B, 4B, 6B, रबर, रंग, ब्रुश इत्यादि।

टिप्पणी

शरीर की रचना, नाप व अनुपात

मानव और पशु का शरीर हड्डियों मांसपेशियों व त्वचा द्वारा बना होता है। यह शरीर बाल रूप से लेकर व द्धावस्था तक परिवर्तित होता रहता है। अतः इनके सभी अंगों की बनावट के बारे में जानकारी होना आवश्यक है।

साधारणतया मानव के शरीर (सिर से पांव तक) को साढ़े सात (7½) भागों में विभाजित किया गया है। शरीर के सबसे ऊपरी भाग चेहरे (सिर से ठोढ़ी तक) को एक भाग कहते हैं। इसी एक भाग के नाप के अनुसार पूरा शरीर नापा जाता है।

पूरे शरीर को इस प्रकार बांटा गया है– सिर से नाभि तक तीन भाग, नाभि से घुटने तक दो भाग, घुटने से पैर तक दो भाग, पैर का पंजा आधा भाग। इस तरह साढ़े सात (7½) भाग विभाजित करें।

इसके अतिरिक्त चेहरे को भी चार भागों में बांटा गया है– पहला भाग: सिर व सिर के बाल, दूसरा भागः माथा, तीसरा भागः नाक, चौथा भागः नाक से नीचे ठोढ़ी तक।

पूरे हाथ की लंबाईः साढ़े तीन भाग।

मानव शरीर को बनाते समय चेहरे (सिर से ढोड़ी तक) के एक भाग को आधार बनाया जाता है। पूर्ण मानव शरीर को बनाते समय शिक्षार्थी को निम्न प्रकार के नाम/अनुपात को ध्यान में रखना चाहिएः

- कंधे से कोहनी तक : 1½ भाग
- कोहनी से पंजे तक : 1½ भाग
- पंजा : ½ भाग

दोनों कंधों की चौड़ाई : 2 भाग होनी चाहिए।

पैर (एड़ी से पंजे तक) की लंबाई 1 भाग होनी चाहिए। (चित्र संख्या 1 देखें।)

टिप्पणी

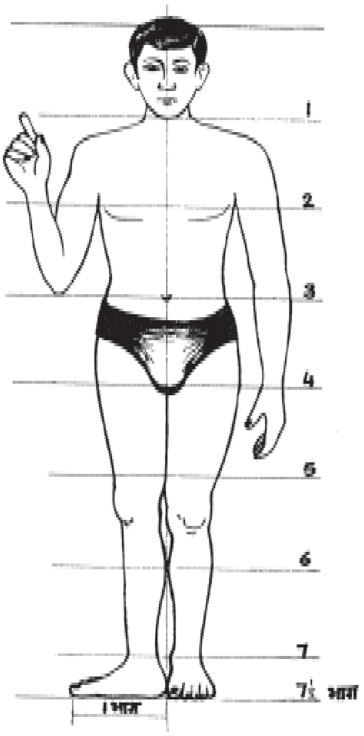

चित्र सं. 1

सरल रेखा-चित्रण

केवल सीधी रेखाओं द्वारा चित्रण करने की क्रिया को सरल-रेखा चित्रण कहते हैं। जिस प्रकार शरीर में हड्डियों के ढांचे का महत्वपूर्ण स्थान है जिससे शरीर खड़ा होता है, बैठता है, या अन्य कार्य करता है, उसी प्रकार मानव आक ति व पशु आक ति बनाने के लिए सरल रेखा चित्र स्केच (Skeleton) जैसा ही कार्य करता है।

विद्यार्थी सरल रेखाओं द्वारा मानव व पशु-आक ति को जितना भी छोटा या बड़ा बनाना चाहे, तुरंत बनाकर देख सकता है और अपने ड्राइंग पेपर के अनुसार आकार दे सकता है। जैसा कि चित्र संख्या 2 में दिखाया गया है।

स्कैच बनाना

सामने से देखकर व मन से रेखांकन करने की क्रिया को स्कैच कहते हैं। स्कैच बनाने की क्रिया धीमे व तेजी से की जा सकती है। इसके लिए गहरी काली पैंसिल (*4* बी, *6* बी) का प्रयोग करना चाहिए।

शुरू में विद्यार्थी साधारण सफेद कागज पर सामने वाली निर्जीव व सजीव वस्तु के अनुसार आड़ी–तिरछी, सीधी व गोलाकार रेखाओं को खींचने का निरंतर अभ्यास करें। इसमें अंगुलियों व कलाई का उपयोग विशेष महत्व रखता है। अतः इसका प्रयोग करते हुए अपनी रेखाओं की गति को बढ़ायें।

टिप्पणी

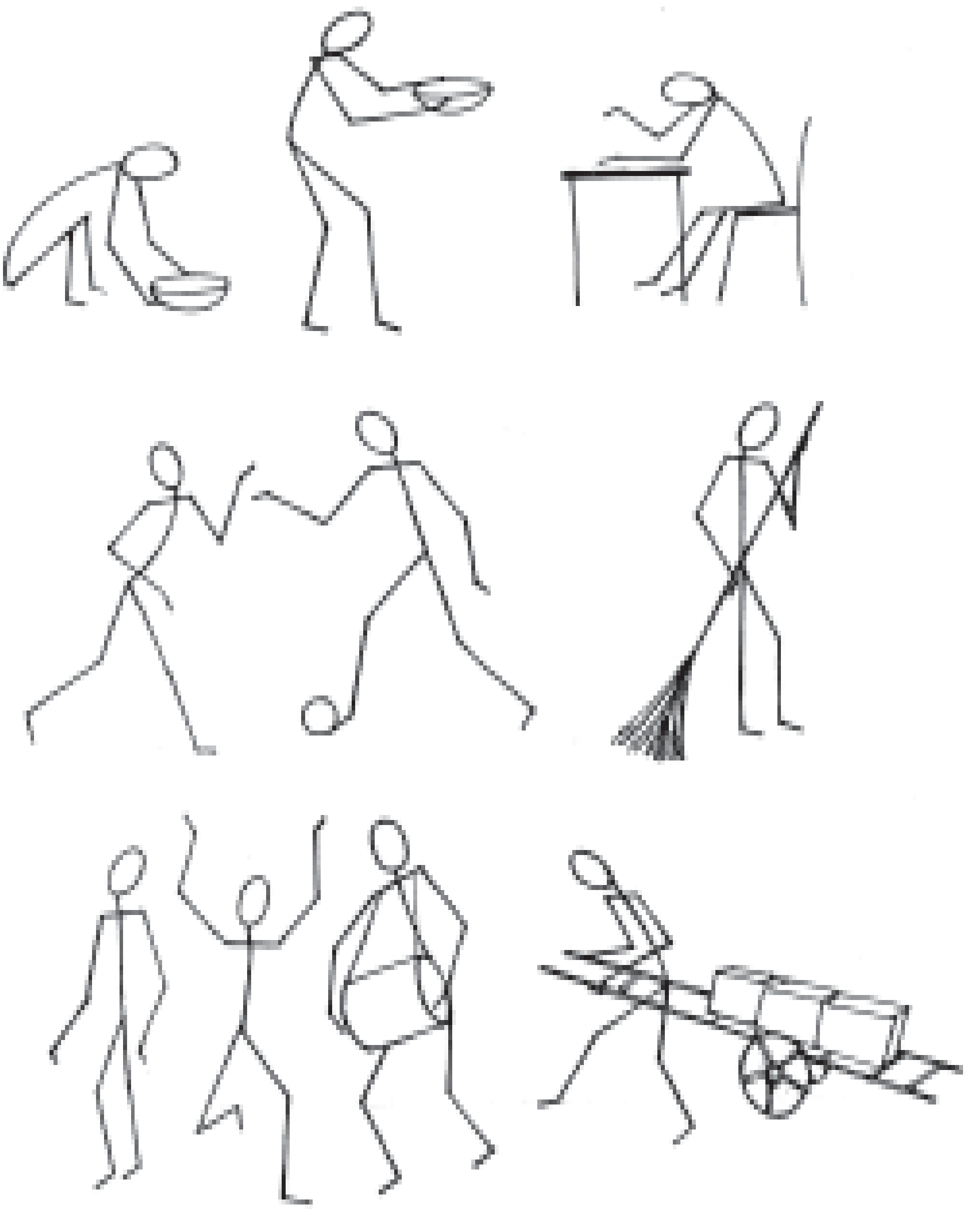

चित्र सं. 2

मनुष्यों व पशुओं में स्थिरता नहीं पाई जाती। अतः इनकी सभी क्रियाओं का गहन अध्ययन व निरीक्षण करना आवश्यक है। विद्यार्थी को चलते–फिरते व बैठकर इनकी सभी क्रियाओं का स्कैच बनाना चाहिए। स्कैच बनाते समय शरीर के हिलने–डुलने वाले भाग को पहले बनाएं और बाकी भागों को बाद में या स्म ति द्वारा पूरा करें। चूंकि स्कैच बनाते समय रबड़ का प्रयोग नहीं होता अतः रेखाओं की गति व नियंत्रण पर ध्यान दें।

मानव व पशु आक तियाँ

मानव व पशु आक तियां बनाने के लिए सरल रेखाचित्र व स्केचिंग का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। इनके निरंतर अभ्यास द्वारा विद्यार्थी इन आक तियों की ड्राइंग करने में सक्षम हो जायेगा।

चित्र संख्या 3 में घोड़े का चित्र बनाने का तरीका दिया गया है। प्रथम अवस्था में सरल रेखा चित्र है जिसमें कुछ रेखाओं व व त के द्वारा घोड़े को कंकाल (skeleton) जैसा आकार दिया गया है। दूसरी अवस्था में घोड़े के शरीर की बनावट तथा मुँह व पैर आदि को एक आकार दिया गया है। अंत में चित्र को पूरा करते हुए मांसपेशियां व शरीर के सभी अंग बारीकी से बनाये गये हैं। इस तरह घोड़े के चित्र को पैंसिल शेड (shade) या रंगों द्वारा पूरा किया जा सकता है। चित्र संख्या 4 और 5 देखें।

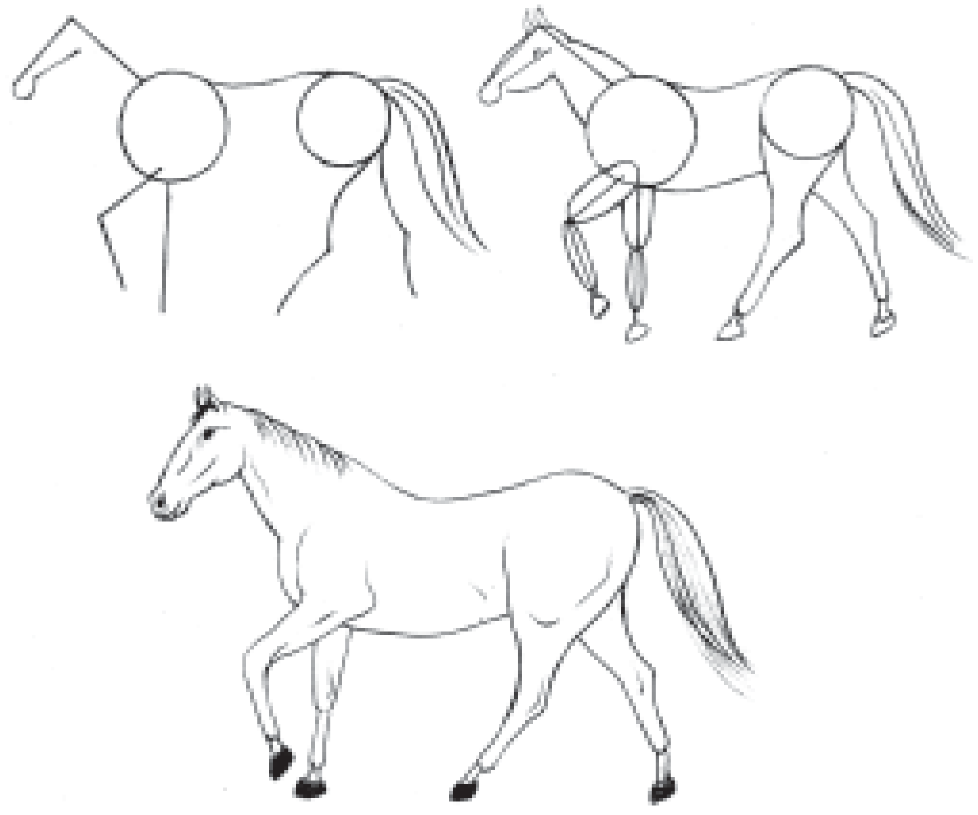

चित्र सं. 3

टिप्पणी

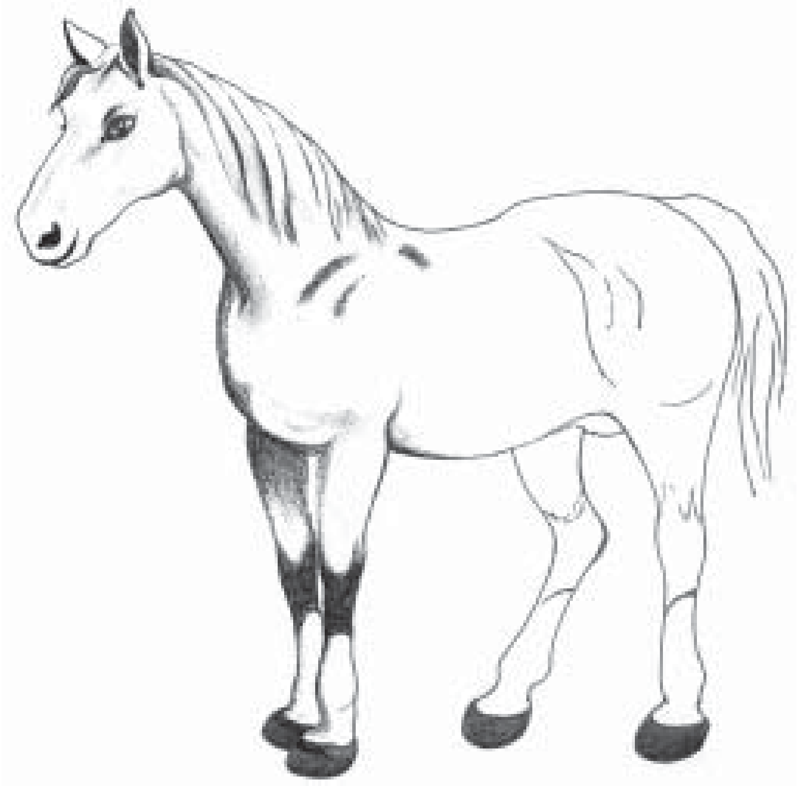

चित्र सं. 4

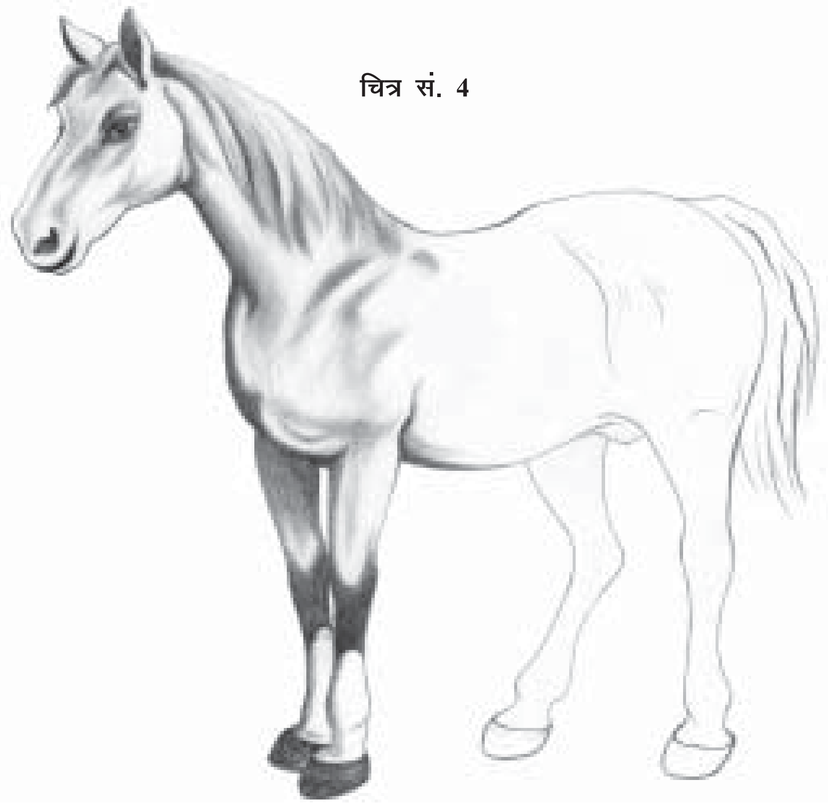

चित्र सं. 5

मानव-आक ति बनाते समय भी इन्हीं बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। केवल स्केचिंग द्वारा भी किसी आक ति को बनाया जा सकता है। चित्र संख्या 6 देखें।

चित्र सं. 6

विद्यार्थी किसी मानव (मॉडल) को अपने सामने अपने अनुसार बैठा सकता है। चित्र बनाना शुरू करने से पहले मॉडल की स्थिति को ध्यानपूर्वक देखें तथा शरीर के नाप का ध्यान रखते हुए चेहरे (Head) वाले भाग के नाप को उतना ले जिससे पूरा शरीर ठीक अनुपात में आपकी ड्राइंग शीट के अनुसार बन सके।

दो या तीन मानव आक तियों को एक साथ रख कर विद्यार्थी विषयानुसार कोई संयोजन (composition) भी बना सकते हैं। चित्र संख्या 7 देखें।

चित्र सं. 7

सारांश

चित्रकार अपने चित्रों को सुन्दर व श्रेष्ठ बनाने के लिए मानव की विभिन्न भावनाओं जैसे हर्ष, क्रोध, विरह, शांत, माधुर्य आदि भावों और अभिव्यक्तियों को दिखाता है। विद्यार्थी को चाहिए कि वह भी अपनी आक तियों में यह सब दिखाने का प्रयास और अभ्यास करें जिससे वह भी सुन्दर चित्र बना सकें।

पशुओं के शरीरों की बनावट विभिन्न प्रकार की होती है। अतः अपने चित्रों में वही आकार देते हुए उनकी आक ति बनाने का प्रयास करें। निरंतर अभ्यास द्वारा आप अच्छे चित्रकार बन सकते हैं।

मॉडल प्रश्न

(क) घोड़े का चित्र बनाकर पैंसिल शेड द्वारा पूरा करें।

(ख) पालतू जानवर का चित्र बनाएं।

(ग) अपने घर के सदस्यों या मित्रों की आक ति बनाएं।

(घ) मनुष्य के शरीर का नाप द्वारा चित्र बनाएं।

शब्दकोश

सुडोलता – गठीलापन

श्रेष्ठ – बहुत अच्छा

टिप्पणी

गति	–	तेज़
सक्षम	–	समर्थ होना
व द्धावस्था	–	बुढ़ापा
विभाजित	–	बांटना
स्केलिटन (skeleton)	–	हड्डियों का ढांचा अथवा कंकाल
निर्जीव	–	प्राणरहित, बेजान
सजीव	–	जिसमें प्राण हो, जो सांस लेता हो
माधुर्य	–	सुन्दरता
विरह	–	बिछुड़ना
संयोजन	–	एक ही स्थान पर कुछ वस्तुओं को सही तरीके से रखना।

इंडियन डांसर
चित्रकार–के के हव्वार

टिप्पणी

कैट
चित्रकार–राम गोपाल